ज्ञानविविधा

कला, मानविकी और सामाजिक विज्ञान की सहकर्मी-समीक्षित, मूल्यांकित, त्रैमासिक शोध पत्रिका

ISSN : 3048-4537(Online)
3049-2327(Print)
IIFS Impact Factor-2.25
Vol.-2; Issue-4 (Oct.-Dec.) 2025
Page No.-194-199

©2025 Gyanvividha

https://journal.gyanvividha.com

Author's :

1. डॉ. जयपाल सिंह प्रजापति
सहा. प्राध्यापक (हिंदी विभाग), पण्डित सुन्दर लाल शर्मा (मुक्त) विश्वविद्यालय, छत्तीसगढ़, बिलासपुर.

2. दुर्गेश कुमार टंडन
शोधार्थी (हिन्दी),
पण्डित सुन्दर लाल शर्मा (मुक्त) विश्वविद्यालय, छत्तीसगढ़, बिलासपुर.

Corresponding Author :

डॉ. जयपाल सिंह प्रजापति
सहा. प्राध्यापक (हिंदी विभाग),
पण्डित सुन्दर लाल शर्मा (मुक्त) विश्वविद्यालय, छत्तीसगढ़, बिलासपुर.

आधुनिक हिन्दी कविता में 'गरीबी' का चित्रण

शोध सार : गरीबी एक सामाजिक, आर्थिक और मानवीय संकट है, जो जीवन में निराशा, दुःख, अभाव और संघर्ष को जन्म देती है। इस यथार्थ को आधुनिक हिन्दी कवियों ने अत्यंत मार्मिक और करुणात्मक रुप में अपनी कविताओं की प्रमुख विषयवस्तु बनाया है। माखनलाल चतुर्वेदी, रामधारी सिंह दिनकर, सूर्यकांत त्रिपाठी निराला, सुमित्रानंदन पंत, केदारनाथ अग्रवाल, नागार्जुन, दुष्यंत कुमार तथा गजानन माधव मुक्तिबोध आदि कवियों ने समाज के गरीब, शोषित, श्रमिक और वंचित वर्ग की वास्तविक समस्याओं को अत्यंत संवेदनशीलता से अपने कविताओं अभिव्यक्त किया है।

कवियों ने गरीबी के कारण उत्पन्न होने वाली अशिक्षा, भूख, बेरोजगारी, असमानता, सामाजिक शोषण और मानवीय गरिमा के ह्रास को उनकी कविताओं में सजीव रुप में उकेरा है। कहीं निर्धन मजदूर की पीड़ा, कहीं भूखी जनता की व्यथा, कहीं समाज-व्यवस्था की विडम्बनाओं और सत्ता की निष्क्रियता पर तीखा व्यंग्य देखने को मिलता है। आधुनिक हिन्दी कवियों ने केवल गरीबी का वर्णन ही नहीं किया, बल्कि उसके कारणों, परिणामों और सामाजिक समाधान की ओर भी संकेत किया है। इन सभी कवियों ने अपने युगीन समाज को दर्पण दिखाते हुए एक मानव-केंद्रित, समानतापूर्ण और शोषण-मुक्त समाज की कल्पना प्रस्तुत की है। आधुनिक हिन्दी कविता अपने समय की सामाजिक संवेदनाओं से गहराई से जुड़ी रही है। गरीब और शोषित वर्ग की पीड़ा का यथार्थ चित्रण हिन्दी कविता को सामाजिक चेतना और मानवीय करुणा से संपन्न बनाता है। गरीबी आज भी विश्व के अनेक देशों, विशेषकर भारत में, सबसे बड़ी समस्या के रुप में विद्यमान है, जिसे हिंदी साहित्यकारों ने सदैव अपनी आवाज दी है।

बीज शब्द - गरीबी, अभिशाप, शोषित, यथार्थ चित्रण, सामाजिक असमानता, संवेदना।

प्रस्तावना : इस बात से कोई इन्कार नही कर सकता की गरीबी एक अभिशाप है। यह एक मानवीय परिस्थिति है जो मानव जीवन में निराशा दुःख और दर्द लाती है। गरीबी पैसे की कमी है और जीवन को उचित तरीके से जीने के लिए सभी चीजों की जरूरत होती है। गरीबी एक बच्चे को बचपन में स्कूल की दाखिला लेने में अक्षम बनाती है और वो एक दुःखी परिवार में अपना बचपन बिताने या जीने को मजबूर होते हैं। निर्धन पैसों की वजह से दो वक्त की रोटी बच्चों के लिए किताबे नही जूटा पाते और बच्चों का सही तरीके से पालन पोषण नही कर पाने के लिए जिम्मेदार अभिभावक का दुःख आदि है। इन सभी परिस्थितियों का आधुनिक हिन्दी के कवियों ने अपने काव्य में मार्मिक एवं करुणात्मक चित्रण किया है।

'गरीबी' को अपने कविता की विषयवस्तु बनाने वाले कवियों में माखनलाल चतुर्वेदी, रामधारी सिंह दिनकर, सूर्यकांत त्रिपाठी निराला, सुमित्रानंदन पंत, केदारनाथ अग्रवाल, नागार्जुन, दुष्यंत कुमार, मुक्तिबोध आदि मुख्य है।

माखन लाल चतुर्वेदी - एक भारतीय आत्मा के नाम से प्रसिद्व माखन लाल चतुर्वेदी बचपन से ही कवि हृदय थे। पत्रकारिता के क्षेत्र में भी अधिक महत्वपूर्ण कार्य किया जितना काव्य क्षेत्र में। क्रांतिकारियों के संपर्क से राजनीतिक क्षेत्र में पदार्पण हुआ। लाल, बाल, पाल को अपना आदर्श मानते थे। महात्मा गांधी से प्रभावित होकर सत्याग्रह आंदोलन व भारत छोड़ो जैसे महत्वपूर्ण आंदोलनों में सहयोग किया। एक हाथ में मशाल तथा दूसरे हाथ में कलम लेकर साहित्य साधना कर समाज के यथार्थ स्थिति को चित्रित करने का प्रयास किया है। इनकी कविताओं में देश-प्रेम के साथ-साथ समाज में व्याप्त गरीबी का चित्रण स्पष्ट रुप से दिखाई पड़ता है। पूंजीपति वर्ग को यह कहना चाहते है कि गरीब, मजदूर आपके पद चिन्ह देखते है, आपको भी उसके हितों का ध्यान रखना चाहिए। इनकी कविताओं में शोषित, निर्धन, असहाय जनों का चित्रण मिलता है। द्दष्टव्य है -

"तुम्हारी चरण रेखा देखते हैं वे, उन्हें भी देखने का तुम समय पाओ
तुम्हारी आन पर कुर्बान जाते हैं, अमीरी से जरा नीचे उतर आगो !
तुम्हारी बाँह में बल है जमाने का, तुम्हारे बोल में जादू जगत का है
कभी कुटिया निवासी बन जरा देखो, कि दलिया न्यौतता रमलू भगत का है !
××××××
उठो कारा बनाओ इस गरीबी की, रहो मत दूर अपनों के निकट आओ
बड़े गहरे लगे हैं घाव सदियों के, मसीहा इनको ममता भर के सहलाओ"[1]

दिनकर - यथा नाम तथा गुण राष्ट्रकवि रामधरी सिंह दिनकर एक क्रांतिकारी, देशप्रेम एवं राष्ट्रीय चेतना के अग्रणी कवि है। देश में जब अंग्रेजों का शासन था, तब लोगों में राष्ट्रीय चेतना का भाव भरने के लिए तथा शोषण का विरोध करते हुए क्रांतिकारी आह्वान किया, ठीक उसी प्रकार समाज में आर्थिक विपन्नता से जूझते लोगों को अपने अधिकार के लिए क्रांति का आह्वान करते हैं। "हिन्दी साहित्य के वह एक ऐसे सशक्त हस्ताक्षर हैं जिनकी कलम में दिनकर यानी सूर्य के समान चमक थी। उनकी कविताएं सिर्फ़ उनके समय का सूरज नहीं हैं बल्कि उसकी रौशनी से पीढ़ियां प्रकाशमान होती हैं।"[2] उन्होंने परशुराम की प्रतीक्षा में एक तरफ धन कूबेरों को ललकारते है तो दूसरी ओर शोषित पीढ़ित, दलित गरीब वर्गो में हुँकार भरते हुए उन्हें नींद से जाग जाने का आह्वान करते हैं-

"ओ बदनसीब अन्धो ! कमज़ोर अभागो?
अब भी तो खोलो नयन, नींद से जागो।
वह अघी, बाहुबल का जो अपलापी है,
जिसकी ज्वाला बुझ गयी, वही पापी है।"[3]

सुमित्रानंदन पंत - छायावाद के आधार स्तंभ व प्रकृति के सुकुमार कवि पंत अत्यंत संवेदनशील कवि है, इनके काव्य

में सौंदर्य, प्रकृति, मानवता के "साथ ही साथ, उन्होंने ग्राम-जीवन के उस पक्ष पर भी दृष्टि फेरी है जहाँ दरिद्रता, अज्ञान, रोग और कराह है एवं क्षुधा शमन, करन को अन्न, तन ढकने को वस्त्र और रक्षा पाने को घर आदि वस्तुओं का अभाव है।"[4] अपनी कविताओं में गरीबी का चित्रण करते हुए भारत के आर्थिक दृष्टि से असक्षम, असहाय लोगों जो जीवन में न तो तन ढकने का समर्थ है और न ही भरपेट भोजन का व्यवस्था कर पाने में सक्षम। इस प्रकार कवि ने स्पष्ट लिखते है कि आज भारत माता की करोड़ों संतान अर्ध क्षुधित रोटी, कपड़ा और मकान की मूलभूत सुविधाओं से वंचित है-

"तीस कोटि संतान नग्न तन,
अर्ध क्षुधित,शोषित निरस्त्र जन,
मूढ़ असभ्य ,अशिक्षित, निर्धन
नत मष्तक तरु तल निवासिनी
भारत माता ग्राम वासिनी।"[5]

सूर्यकांत त्रिपाठी निराला - छायावाद के चतुष्टय के प्रतिनिधि कवि सूर्यकांत त्रिपाठी निराला विद्रोही स्वर् के कवि के रूप में जाने जाते हैं। उनके काव्य में गरीबी का चित्रण अत्यंत यथार्थ, मार्मिक, और सामाजिक विषमता पर कटाक्ष है। निराला ने समाज व्याप्त आर्थिक विषमता को सामाजिक जीवन के लिए अभिशाप मानते हैं। अपने कविताओं में गरीबी का यथार्थ चित्रण कर सामाजिक व्यवस्था पर प्रश्न चिन्ह लगाते हैं। 'वह तोड़ती पत्थर', 'भिक्षुक' जैसे कविताओं में गरीबी का यथार्थ चित्रण देखने को मिलता है। इनकी कविताओं मे दीनहीन, असहाय लोगों के जीवन की झाँकी स्पष्ट परिलक्षित होती है। दीन-हीन गरीब 'भिक्षुक' का सजीव चित्रण दृष्टव्य है-

"वह आता-
दो टूक कलेजे के करता
पछताता पथ पर आता।
पेट-पीठ दोनों मिलकर हैं एक,
चल रहा लकुटिया टेक,
मुट्ठीभर दाने को, भूख मिटाने को,
मुँह फटी पुरानी झोली को फैलाता
दो टूक कलेजे के करता
पछताता पथ पर आता।
साथ दो बच्चे भी हैं सदा हाथ फैलाये,
बायें से वे मलते हुए पेट चलते हैं"[6]

एक गरीब मजदूरीन की अवस्था का चित्रण करते हुए कवि ने 'तोड़ती पत्थर' कविता में चित्रण किया है-

"कोई न छायादार
पेड़ वह जिसके तले बैठी हुई स्वीकार;
श्याम तन, भर बँधा यौवन,
नत नयन, प्रिय-कर्म-रत-मन,
गुरु हथौड़ा हाथ,
करती बार बार प्रहार
सामने तरु-मालिका अट्टालिका, प्राकार।"[7]

केदारनाथ अग्रवाल - केदारनाथ अग्रवाल प्रगतिवादी धारा के प्रमुख कवि है। मार्क्सवादी विचारधारा को लेकर

जनसाधारण के जीवन की यथार्थ स्थिति व उनकी संवेदनाओं को अपने काव्य में अभिव्यक्ति प्रदान करते हैं। उन्होंने मेहनतकश लोगों के जीवन को नजदीक से देखा है। गरीबी और संघर्ष को अपने कविताओं में प्रतीकों के माध्यम से व्यक्त किया है। कवि केवल गरीबी का चित्रण नहीं करते बल्कि सामाजिक और आर्थिक असमानता के प्रति आक्रोश व्यक्त करते हुए समाज में समता व मानवीय मूल्यों की स्थापना करने का प्रयास करते हैं। इनके कविताओं में प्रकृति चित्रण के साथ-साथ मानव, खास कर श्रमदेव किसान की दीन-हीन दशा का चित्रण मिलता है, जो यह सोचने पर मजबूर करता है कि गरीबी जीवन कितना दुःख व कष्टदायी होता, यह मानवता के प्रतिकूल है। 'बंगाल का आकाल' नामक कविता मे भूख से बेहाल व्यक्तियों का मार्मिक चित्रण किया हैं-

"बाप बेटा बेचता है, भूख से बेहाल होकर।
धर्म धीरज प्राण खोकर, हो रही अनरीति बर्बर
राष्ट्र सारा देखता है।"[8]

नागार्जुन- प्रगतिवादी जन कवि बाबा नागार्जुन अपने जीवनानुभूति में आर्थिक विपन्नता को करीब से देखकर सामाजिक जीवन में व्याप्त गरीबी के दुष्परिणामों को अपने कविता में प्रमुखता से चित्रित करते हैं। यह कहना अतिश्योक्ति नहीं होगा कि नागार्जुन का रचना संसार में शोषित, उपेक्षित, दीन-हीन, असहाय वर्ग स्थान पाते हैं। उनका झुकाव मजदूरों, किसानों की पीड़ा की अभिव्यक्ति काव्य के केंद्र में रहा। नरेन्द्र सिंह' कहते हैं- "नागार्जुन जानते हैं कि वास्तव में इस दुनिया में दो दुनिया हैं, एक गरीबों की, एक अमीरों की, एक शोषितों की, एक शोषकों की। बहुत मामूली-सी लगने वाली बात आज भी सबसे महत्त्वपूर्ण बात है, सामाजिक आर्थिक विषमता को जितने जबर्दस्त और सीधे ढंग से नागार्जुन ने प्रस्तुत किया उतने जबर्दस्त और सीधे ढंग से और किसी ने नहीं। इसके लिए कौशल की उतनी जरूरत नहीं जितनी गरीबों के साथ मिली मुहब्बत और उनके हर दुःख में तड़प उठने की, अपार क्षमता की जरूरत है। यही चीज नागार्जुन जैसे कवियों की हड्डियों की ताकत बनी हुई है।"[9] नागार्जुन स्वयं अपने जीवन की यथार्थ चित्रण इस प्रकार किया है-

"पैदा हुआ था मैं
दीन-हीन-अपठित किसी कृषक-कुल में-
आ रहा हूँ पीता अभाव का आसव ठेठ बचपन से
कवि! मैं रूपक हूँ दबी हुई दूब का
जीवन गुजरता प्रतिफल संघर्ष में!"[10]

इसी तरह नागार्जुन का "अकाल और उसके बाद' कविता सघन संवेदना को मूर्त करती हुई बिम्बवादियों के लिए एक चुनौती है।

कई दिनों तक चूल्हा रोया, चक्की रही उदास
कई दिनों तक कानी कुतिया सोई उनके पास
कई दिनों तक लगी भीत पर छिपकलियों की गश्त
कई दिनों तक चूहों की भी हालत रही शिकस्त।
दाने आए घर के अन्दर कई दिनों के बाद
धुआँ उठा आँगन से ऊपर कई दिनों के बाद
चमक उठी घर भर की आँखें, कई दिनों के बाद
कौए ने खुजलाई पाँखें कई दिनों के बाद।"[11]

दुष्यंत कुमार -आधुनिक हिंदी काव्य में सर्वाधिक प्रखर कवि माने जाते हैं। अपने समय की व्याप्त सामाजिक, आर्थिक

असमानता को देखा, भोगा। जीवन की सत्य कटु अनुभवों, संवेदनाओं व छोटी से छोटी विषय को भी अपने काव्य का विषय बनाया। उसे बेबाक ढंग से बिना डरे यथार्थ स्थिति का चित्रण करने का अदम्य साहस किया। समाज और देश मेरा नेताओं की जनता के प्रति व्यवहार, स्वार्थ प्रियता, चारों ओर फैली भयावह स्थितियाँ, भूखी जनता की परेशानियों एवं शासक की लापरवाही सब कुछ वह अपने काव्य में समेटा है। कवि कहते है कि दिल्ली की संसद में बहस चल रही है कि भूखी जनता को रोटी मिलनी चाहिए, किन्तु कोरी बहस से किसी का पेट नही भरता, हमें बस सब्र करने के लिए कह देते है स्पष्ट है -

"न हो कमीज तो पाँवों से पेट ढंक लेंगे,
ये लोग कितने मुनासिब हैं इस सफ़र के लिए।
आज सड़कों पे चले जाओ तो दिल बहलेगा,
चंद ग़ज़लों से तन्हाई नहीं जाने वाली।
लोग हाथों में लिए बैठे हैं अपने पिंजरे,
आज सय्याद को महफ़िल में बुला लो यारो।

इन तीन चित्रों में भारतीय जनता की प्राथमिक समस्याओं की ओर संकेत किया गया है। नग्नता को ढँक लेने के लिए कपड़े, जीने के लिए या तो कम से कम साँस लेने के लिए दो जून दो कौर और एक छतवाले मकान के अभाव में तड़प रही जनता की असहनीय अवस्था सभ्य देश के लिए निश्चय ही अपमान मानते हैं। वे केवल समस्याओं की ओर संकेत भर करके चुप नहीं होते, भूखे लोगों की तुलना उनसे करने लगते हैं जो भूख की परवाह तक नहीं करते :

तुमने इस तालाब में रोहू पकड़ने के लिए
छोटी-छोटी मछलियाँ चारा बनाकर फेंक दीं।
हम ही खा लेते सुबह को भूख लगती है बहुत,
तुमने बासी रोटियाँ नाहक उठाकर फेंक दी।
उनको क्या मालूम विरुपित इस सिकता पर क्या बीती,
वे आए तो यहाँ शंख-सीपियाँ उठाने आएँगे।"[12]

गजानन माधव मुक्तिबोध - मुक्तिबोध की गणना हिन्दी के प्रगतिवादी कवियों में की जाती है। आमजन की दु:ख-दर्द व पीड़ा को मुक्तिबोध ने अपने काव्य के विषय बनाया। निराला के बाद सबसे अधिक जनकवि के रूप में मुक्तिबोध का नाम लिया जाता है। सामाजिक स्थिति का ही नहीं बल्कि जीवन की निज विशिष्टता को भी मुक्तिबोध अपने काव्य की विषय चिंतन में स्थान देते हैं। इनके कविताओं में आर्थिक व सामाजिक विषमता का यथार्थ चित्रण मिलता हैं। शोषण के कारण बेहाल होती जिंदगी, जिससे दो वक्त का खाना भी नसीब नहीं होता। गरीबी के कारण लोग असहाय, निराश होकर रह जाते हैं। इसका एक महत्वपूर्ण कारक के रूप में सामाजिक, आर्थिक विषमता को मानते हैं। वे सर्वहारा वर्ग की पीड़ा को अभिव्यक्ति देने वाले कवि है, मुक्तिबोध का मानना है कि जहाँ शोषण, गरीबी से मुक्ति मिल गयी हो वहां ही वर्गहीन समाज का निर्माण होगा। द्दष्टव्य है -

"समस्या एक-
मेरे सभ्य नगरों और ग्रामों में
सभी मानव सुखी,
सुंदर व शोषण-मुक्त
कब होंगे"[13]

इस प्रकार कहा जा सकता है कि आधुनिक हिन्दी कविता में अपने युग परिवेश के आधार पर प्रायः सभी

कवियों ने अपनी कविताओं में गरीबी का चित्रण किया है। कोई भी कवि अपनी युगीन परिवेश की समस्याओं से अछूता नही रह सकता। उनको अपने अंतर्मन की आवाज को भी अभिव्यक्ति देना होता है इसलिए आधुनिक युग के कवियों ने अपने काव्यों में दीन, दुःखी, शोषितजनों का करुणात्मक चित्रण किया है। यथार्थ में गरीबी के समान कोई दुःख-दर्द नहीं है आज दुनिया के कई देशों में गरीबी की समस्या विद्यमान है। भारत में भी गरीबी, शोषितजनों के दुःखों का सबसे बड़ा कारण है।

संदर्भ सूची :

1. जोशी, श्रीकांत. माखनलाल चतुर्वेदी, नई दिल्ली : वाणी प्रकाशन, 2003, पृष्ठ 306.
2. सुधाकर, अंजन कुमार. दिनकर प्रकाश, बिलासपुर : बुक्सक्लिनिक प्रकाशन, 2023, पृ. 36.
3. सिंह, केदारनाथ. परशुराम की प्रतिक्षा, इलाहाबाद : लोक भारती प्रकाशन, 2016, पृ.03.
4. अहमद, इकबाल. युग स्पर्शी पंत, दिल्ली : संदर्भ प्रकाशन, 2002, पृ. 13.
5. पंत, सुमित्रानंदन. तारापथ, इलाहाबाद : लोकभारती प्रकाशन, 2009, पृ.143
6. मांगलिक, रोहित. कविता, लखनऊ : एडुगोरिल्ला प्रकाशन, 2023, पृ. 54.
7. नवल, नंदकिशोर. निराला कृति से साक्षात्कार, नई दिल्ली : राजकमल प्रकाशन, 2009, पृ. 508.
8. कुमार कौशलेंद्र, हिंदी साहित्य का इतिहास-आधुनिक काल, पटना:ठाकुर पब्लिकेशन प्रा. लि., 2024-25,पृ. 61.
9. https://www.apnimaati.com/2017/11/blog-post_40.html?m=1,15-11-2025, 10:42.
10. राय, आशुतोष. नागार्जुन का गद्य साहित्य, इलाहाबाद : लोक भारती प्रकाशन, 2006, पृ. 2.
11. मांगलिक, रोहित. आधुनिक हिंदी काव्य - 1, लखनऊ : एडुगोरिल्ला प्रकाशन, 2023, पृ. 208.
12. कमलेश, कृष्ण. अपराजेय आस्था का कवि दुष्यंत कुमार, दिल्ली : आलेख प्रकाशन, 2005, पृ. 76.
13. मांगलिक, रोहित. आधुनिक हिंदी काव्य - 1, लखनऊ : एडुगोरिल्ला प्रकाशन, 2023, पृ. 55.

•